U.G. IV

MJC – 05 : Western Philosophy

Theory of 'Pre-established Harmony'

'पूर्वस्थापित सामञ्जस्य' का सिद्धान्त

लाइबनीज के दर्शन में चिदणु गवाक्षहीन हैं। सभी चिदणु स्वतंत्र और क्रियाशील हैं। लाइबनीज के समक्ष यह एक जटिल समस्या है कि सभी चिदणु एक दूसरे से स्वतंत्र हैं तो उनमें कोई संबंध कैसे संभव है? सृष्टि में एकरूपता, व्यवस्था और नियमबद्धता कैसे हो सकती है? आत्मा और शरीर के चिदणुओं में परस्पर संबंध कैसे हो सकता है? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए लाइबनीज ने 'पूर्व स्थापित सामञ्जस्य' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर ने सभी चिदणुओं को स्वतन्त्र बनाया है। ईश्वर ने उन्हें इस प्रकार बनाया है कि वे एक दूसरे से स्वतन्त्र होते हुए भी परस्पर एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं। चिदणुओं की यह एकता अथवा

ईश्वर ने उनमें पहले से ही स्थापित कर दिया है। इस सार्वभौम पूर्वस्थापित सामञ्जस्य नियम के कारण प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र होते हुए भी विश्व की एकता और सामञ्जस्य को बनाये रखता है। जब ईश्वर ने चिदणुओं को बनाया तो उसी समय उनमें परस्पर सामञ्जस्य को भी स्थापित कर दिया। यह सामञ्जस्य चिदणुओं के स्वभाव में ही निहित है। लाइबनीज ने इसकी उपमा आर्केस्ट्रा से दी है। यद्यपि प्रत्येक वाद्यन्त्र की अपनी अलग - अलग स्वर - लहरी (सुरीली आवाज) होती है तथापि इन वाद्यन्त्रों का विशिष्ट स्वर परस्पर सामञ्जस्यपूर्ण होता है। इसके परिणामस्वरूप एकतान संगीत की उत्पत्ति होती है।

लाइबनीज के अनुसार, यद्यपि ईश्वर ने सभी चिदणुओं को स्वतन्त्र बनाया है, तथापि उन्हें ऐसा बनाया गया है कि वे स्वभावतः सामञ्जस्यपूर्ण हों। वे पारस्परिक सामञ्जस्य के साथ - साथ अपनी चेतन शक्ति का विकास करते हैं। चिदणुओं का अंतिम लक्ष्य परम चिदणु (ईश्वर) की अवस्था को प्राप्त करना है। इससे स्पष्ट है कि चिदणुओं की वैयक्तिकता (विशिष्टता) और अनेकता के होते हुए भी उनमें लक्ष्य की एकरूपता

है। प्रत्येक चिदणु का परम श्रेय परम चिदणु बनना है। इस प्रकार यहाँ पर लाइबनीज का दर्शन प्रयोजनवादी हो जाता है।

पूर्वस्थापित सामञ्जस्य के नियम द्वारा लाइबनीज आत्मा और शरीर के बीच संबंध की जटिल समस्या का भी समाधान करते हैं। उनके अनुसार आत्मा और शरीर में किसी प्रकार का यांत्रिक संबंध नहीं है। द्वैतवादी होने के कारण डेकार्ट आत्मा और शरीर में अन्तर्क्रिया (क्रिया-प्रतिक्रिया) का संबंध मानते थे। स्पिनोजा ने आत्मा और शरीर के द्रव्यात्मक द्वैत को गुणात्मक द्वैत में बदल दिया और विचार तथा विस्तार का समानान्तर माना। लाइबनीज ने इनमें से किसी सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया। लाइबनीज कहते हैं कि आत्मा के चिदणुओं और शरीर के चिदणुओं में उनकी सर्जना के समय से ही सामञ्जस्य और साहचर्य पाया जाता है। अतः आत्मा और शरीर का संबंध पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य-नियम पर आधारित है।

लाइबनीज़ विश्व की जैविकि अवयवी (Organic) अवधारणा पर विशेष बल देता है। ईश्वर ने विश्व की व्यवस्था इस प्रकार किया है कि उसे विश्व में

हस्तक्षेप नहीं करना पड़ता है। विश्व में पूर्ण सामञ्जस्य है। यद्यपि विश्व में प्रत्येक वस्तु की व्याख्या यांत्रिक ढंग से की जा सकती है क्योंकि विश्व में एक व्यवस्था, नियम और एकता है किन्तु यह व्यवस्था, नियम और एकरूपता किसी न किसी उच्च लक्ष्य की ओर संकेत करती है। यह परम लक्ष्य ईश्वर ही हो सकता है जिसे सृष्टि का मूल आधार कहा जा सकता है। ईश्वर ही समस्त घटनाओं का परम कारण और अंतिम लक्ष्य है। जगत् की सभी वस्तुएँ परस्पर संबद्ध हैं। जगत् में होने वाली प्रत्येक घटना का प्रभाव संसार के हर एक पिण्ड में देखा जा सकता है। चिदणुओं को गवाक्षहीन कहने का यह अर्थ नहीं है कि वे एक-दूसरे से पूरी तरह असम्बद्ध हैं। यहाँ लाइबनीज के कहने का निहितार्थ यह है कि चिदणुओं में किसी प्रकार का दैशिक और कालिक संबंध नहीं है। देश और काल के अन्तर्गत आने वाले यांत्रिक संबंधों से चिदणु मुक्त हैं क्योंकि वे स्वरूपतः आध्यात्मिक (चेतन) हैं। पूर्वस्थापित सामञ्जस्य चिदणुओं के बीच में आध्यात्मिक (आन्तरिक) संबंध का विधान करता है क्योंकि यह संबंध ईश्वर के द्वारा स्थापित किया गया है। लाइबनीज के अनुसार

जिसे यान्त्रिक संबंध समझा जा रहा है वह एक उच्च-स्तरीय आध्यात्मिक संबंध है। इससे स्पष्ट है कि एक चिदणु पर अन्य चिदणुओं का प्रभाव तार्किक दृष्टि से पड़ता है। वस्तुत: यह प्रभाव ईश्वरकृत है। अत: विश्व की व्यवस्था आध्यात्मिक है।

लाइबनीज ने प्रकृति की यांत्रिक व्यवस्था और दैवी कृपा पर आधारित नैतिक व्यवस्था में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। ईश्वर इस विश्वरूपी मशीन (चिदणुओं की सामञ्जस्यपुर्ण व्यवस्था) का स्रष्टा है। वह व्याष्टि रूप में एक-एक चिदणु का स्थापित नहीं है बल्कि संपुर्ण विश्व की सामञ्जस्यपुर्ण व्यवस्था का स्रष्टा है। अत: प्रत्येक चिदणु अपने जन्म से पहले विद्यमान है। उसका स्रष्टा होने के साथ-साथ ईश्वर इस व्यवस्था का नियामक और सर्वोच्च शासक है। चूँकि चिदणुओं का आविर्भाव ईश्वरीय चमत्कार से हुआ है, इसलिए वे ईश्वरीय इच्छा से ही नष्ट हो सकते हैं। ईश्वर के द्वारा बनायी गयी यह व्यवस्था चिदणुओं में निहित है, जिसे 'पुर्व-स्थापित सामञ्जस्य का नियम' कहा जाता है।

यह सिद्धान्त अत्यन्त विवादास्पद है। ईश्वर पुर्व-स्थापित सामञ्जस्य के नियम का स्रष्टा

होते हुए भी स्वयं भी इस नियम से बँधा हुआ है। अतः रसल ने इस सिद्धान्त की कटु आलोचना की है। रसल के अनुसार चिदणुवाद और ईश्वरवाद दोनों सिद्धान्त साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। यदि ईश्वर को चिदणुओं की सामञ्जस्यपूर्ण व्यवस्था का स्रष्टा माना जाय तो ईश्वर स्वयं चिदणु कैसे हो सकता है? यदि चिदणुवाद को स्वीकार कर लिया जाय तो ईश्वर को चिदणुओं की व्यवस्था का स्रष्टा नहीं माना जा सकता। वस्तुतः प्रत्येक चिदणु अपने विकास की अंतिम अवस्था में ईश्वरत्व को प्राप्त कर सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो उसके दर्शन में ईश्वर बलात् थोप दिया गया हो। रसल के अनुसार ईश्वरवाद लाइबनीज के दर्शन का एक ढोंग है। उसका वास्तविक दर्शन चिदणुवाद है।

किन्तु रसल की इस आलोचना को स्वीकार कर लिया जाय तो लाइबनीज का संपूर्ण दर्शन ही ध्वस्त हो जायगा। पूर्वस्थापित सामञ्जस्य नियम के बिना चिदणुवाद की स्थापना नहीं की जा सकती है। चूँकि इस सार्वभौम नियम का सूत्रधार ईश्वर है, इसलिए ईश्वर के अभाव में पूर्वस्थापित सामञ्जस्य-नियम की व्याख्या नहीं की जा सकती है।